Shankaracharya

Viswanathastakam

विश्वनाथाष्टकम्

Sanskrit

Paper – Printed

N.A. (very old)

4 Folio

6"x 3.5"

Complete

❀ अथ ❀

विश्वनाथाष्टक ।

❀ प्रारम्भः ❀

श्री गणेशाय नमः ।

अथ विश्वनाथाष्टक ।

१ आदिशंभु स्वरूप मुनिवरचन्द्र शीश जटाधरम् ।
मुण्डमाल विशाल लोचन वाहनं वृषभध्वजं ॥
नागचर्म त्रिशूल डमरू भस्म अङ्ग विहंगमम् ।
श्रीनीकंठ हिमाल जलधर विश्वनाथविश्वेश्वरम् ॥

गंग संग प्रसंग सरिता कामदेव सुसेवितं ।
नाद बिंदुसंयोग साधन पंचवक्र त्रिलोचनम् ॥
इन्दुबिंदु बिराज शशिधर सेवितं सुरवंदितं ।
श्रीनीलकंठ० ॥२॥ ज्योतिर्लिंग सुलिंग फणि-
मणि दिव्य देव सुसेवितं । मालती तनु पुष्प
माला गंध धूप निवेदितं । अनल कुम्भ
सुकुम्भ झलकत कलश कंचन शोभितं ॥ श्री

वि०

नीलकंठ० ॥ ३ ॥ मुकुट कीट सुकर्ण कुण्डल मंडितं मुनि राजितम् । हार मुक्ता कनक रेखा रेखितं सुविशेषितं । गंध मर्दन शैल आसन आसनं परकासनं श्रीनीलकंठ० ॥ ४ ॥ मेघ डमरूछत्र धारण चरणकमल रसायनं । पुष्परथ पर चमन मूरति गौरिसंग दसा शिवम् ॥ चैत्र पालक पालभैरव कुसुम नवग्रह भूषणम् ॥ श्री

२

अ०

२

नीलकंठ० ॥ ५ ॥ त्रिपुर दैत्य सुदैत्य दानव
प्राप्यते फलदायकं । रावणादश कमल मस्तक
अङ्ग जलधर सायकं ॥ श्रीरामचन्द्र सुचन्द्र
रघुपति सेतुबंध निवासितं श्रीनीलकंठ० ॥ ६ ॥
मथित दधि जल शेष विगलित भ्रमित मेरु
सुमेरुकं । स्रवत विगलित दीप मलवत युग्म
नेत्र सुनेत्रकं ॥ महादेव सुदेव सुरपति सर्व

देव विस्वंभरं ॥ श्रीनीलकंठ० ॥ ७ ॥ रुद्ररूप सुतेजनमक्कुत भत्त पान हलाहलं। गगन बेधित अखिल धारा आदि अन्त समाहितं ॥ काम कुञ्जर मान केशव महाकाल त्रिस्वेस्वरं। श्री नीलकंठ० ॥८॥ ऋतुवसंत सुचक्र चौदिस प्राप्यते फलदायकम् पूर्वकाशीमध्ये बाशी मनुज मंगलदाकम्। अम्बिके तट बैजनाथं शैलशिखर

वि०

२

अ०

२

महेश्वरम् ॥ श्रीनीलकंठहिमाल जलधर विश्व नाथ विश्वेश्वरम् ॥ ६ ॥

इति श्रीशंकराचार्य्यं विरचितं विश्वनाथा ष्टकम् समाप्तम् ।

हरप्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

मेवालाल ऐ० को०

कचौड़ीगली बनारस सिटी ।

"श्रीवागेश्वरी प्रेस" दारानगर बनारस सिटी में मुद्रित ।

❋ इति ❋

विश्वनाथाष्टक ।

❋ समाप्तः ❋

पता--गुल्लू प्रसाद केदारनाथ बुकसेलर,
कचौड़ी गली बनारस सिटी ।

अथ

अन्नपूर्णाष्टक

प्रारम्भः

मल्लिकार्जुन शंकराचार्य स्वामी ब्राह्मणगांवकर.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अन्नपूर्णाष्टक ॥

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौंदर्यरत्नाकरी।
निर्धूताखिल घोर पावनकरीप्रत्यक्ष माहेश्वरी।
प्रांलेयाचल वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी।
भिक्षांदेहि कृपावलंबनकरी माता अन्नपूर्णे
श्वरी ॥ १ ॥ नानारत्न विचित्र भूषणकरी

हेमांबराडाम्बरी । मुक्ताहार बिलम्बमान विलस
द्वक्षोज कुम्भान्तरी ॥ काश्मीरागुरुभाशिता
रुचिकरीकाशीपुरीधीश्वरी भिक्षांदेहि० ॥ २ ॥
योगानन्दकरीरिपु क्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी ।
चन्द्रार्कानल भासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षा
करी ॥सर्वैश्वर्यसमस्त वांछितकरी काशीपुरा
धीश्वरी। भिक्षांदेहि० ॥ ३ ॥ कैलाशाचल
कंदरालयकरी गौरीउमाशंकरी। कौमारीनिगमार्थ

गोचरकरी। ओंकारबीजाक्षरी ॥ मोक्षद्वारकपाट
पाटनकरी काशीपुरीधीश्वरी॥भि०.४॥दृश्यादृश्य
प्रभूत वाहनकरी ब्रह्माण्डभांडोदरी। लीलानाटक
सूत्र बेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी ॥ श्रीविश्वेश्वर
मनः प्रसादन करी काशीपुरी धीश्वरी भि०॥५॥
उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताअन्नपूर्णेश्वरी ।
बेणीनीलसमान कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी॥
सर्वानन्दकरी सदाशुभकरी काशीपुरी धीश्वरी

अ २

अ २

भि०॥६ आदिक्षांति समस्त बर्णनकरी शम्भो-
स्त्रिभावाकरी । कास्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी
नित्यां कुराङ्करी । कामा कांक्षकरी जनो-
दयकरी काशीपुरी धीश्वरी । भिक्षांदेहि० ।७।
देविसर्वबिचित्ररत्नरचिताद्दाक्षायणीसुन्दरी वामा
स्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ॥ भक्ता-
भिष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुरीं धीश्वरी । भि-
क्षांदेहि॥८॥ चन्द्रार्कानलकोटि२ सदृशी चन्द्रांशु

अ
२

गोचरकरी। ओंकारबीजाक्षरी ॥ मोक्षद्वारकपाट
पाटनकरी काशीपुरीधीश्वरी॥भि०.४॥दृश्यादृश्य
प्रभूत वाहनकरी ब्रह्माण्डभांडोदरी। लीलानाटक
सुत्र बेदनकरी विज्ञानदीपांकुरी ॥ श्रीविश्वेश्वर
मनः प्रसादन करी काशीपुरी धीश्वरी भि०॥५॥
उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताअन्नपूर्णेश्वरी ।
बेणीनीलसमान कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी॥
सर्वानन्दकरी सदाशुभकरी काशीपुरी धीश्वरी

अ
२

भि०॥६ आदिक्षांति समस्त वर्णनकरी शम्भो-
स्त्रिभावाकरी । काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी
नित्यां कुराशर्वरी । कामा कांक्षकरी जनो-
दयकरी काशीपुरी धीश्वरी । भिक्षांदेहि० ।७।
देविसर्वविचित्ररत्नरचिताद्राक्षायणीसुन्दरी वामा
स्वादुपयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ॥ भक्ता-
भिष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुरी धीश्वरी । भि-
क्षांदेहि॥८॥ चन्द्राकानलकोटि२ सदृशी चन्द्रांशु

अ बिम्बाधरी । चन्द्रार्काग्निसमान कुन्तलहरी अ
चन्द्रार्कवर्णेश्वरी । मालापुस्तक पाशसांकुशधरी
३ काशीपुराधीश्वरी।भिक्षांदेहि०॥९।क्षत्रत्राणकरी
महाभयकरी माताकृपा सागरी। साक्षान्मोक्ष
करी सदाशिवकरी विश्वेश्वरी श्री धरी ॥ ३
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुरीधीश्वरी
भिक्षांदेहि ॥ १० ॥ अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर
प्राणवल्लभे । ज्ञानवैराग्य सिध्यर्थं भिक्षांदेहि

चपार्वती ॥ ११ ॥ माता च पार्वती देवी पितादेवो माहेश्वरः। बांधवाशिव भक्तास्च स्वदेशो भुवन त्रयम् ॥२॥

इति श्रीमच्छंकराचार्य विरचितं अन्नपूर्णाऽष्टक संपुर्णम्।

पुस्तक मिलनेका पता--

गुल्लू प्रसाद केदारनाथ बुकसेलर,

कचौड़ी गली बनारस सिटी।

"श्री बागेश्वरी प्रेस" दारानगर, बनारस सिटी में मुद्रित।

इति ।

अन्नपूर्णाष्टक

समाप्तः ।

❋ अथ ❋

कालभैरव स्तोत्र ।

प्रारम्भः ।

❀ श्रीगणेशायनमः ❀

॥ कालभैरवस्तोत्र ॥

देवराज सेव्यमान पावनांघ्रि पंकजम् । व्याल यज्ञ सूत्रमिन्दु शेखरं कृपाकरं ॥ नारदादि योगि बृन्द बंदिन्तं दिगंबरम् । काशिकापुराधिनाथ कालभैरवंभजे ॥ १ । भानुकोटिभास्करं भवाब्धि तारकंपरं । नीलकंठमिप्सितार्थं दायकंत्रिलोच-

कालः
२

नं ॥ कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं । का-
शिका० ॥२॥ शूलटंक पासदंड पाणिमादिकार-
णम् । श्यामकाय मादिदेव मक्षरं निरामयम् ।
भीम विक्रमंप्रभुविचित्रतांडवप्रियम् । काशिका
पुरा० ॥३॥ भक्तिमुक्तिदायकंप्रकास्वचारुविग्रहम्
। भक्तवत्सलंस्थिति समस्तलोकविग्रम् ॥ निक्व
ण मनोज्ञहेम किंकिणिसत्कटिं । काशिका०॥
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं । कर्मपाशमो-

चकंसुशर्बदायकंविभुं ॥ स्वर्णवर्णशेषपाशशो-
भितांगमण्डलं । काशिका० ॥ ५ ॥ रत्नपादुका
प्रभाभिरामपादयुग्मकं । नित्यमद्वितीयमिष्टदैव-
तंनिरञ्जनं ॥ मृत्युदर्पनाशनंकरालदंष्ट्रमोक्षणं ।
काशिका० ॥ ६ ॥ अट्टहासभिन्नपद्म जांडकोश
सन्तति । दृष्टिपातनष्टपाप जालमग्रशासनं ॥
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकंधरं । काशि-
का० ॥ ७ ॥ भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदाय-

कं । काशिवासलोकपुण्य पापशोधकंविभुं ॥ नीतिमार्गकोविदंपुरातनं जगत्पतिं । काशिका० ॥ ८ ॥ कालभैरवाष्टकं पठन्तियेमनोहरं । ज्ञान मुक्ति साधनं विचित्रपुण्यवर्द्धनम् ॥ शोक मोह दैन्य लोभ पाप ताप नाशनम् तेप्रयान्तिका- लभैरवाङ्घ्रिसन्निधिंध्रुवम् ॥ काशीका० ॥ ९ ॥

इति श्रीमच्छंकराचार्य्यं विरचितं
कालभैरवाष्टकस्तोत्र समाप्तं

पुस्तक मिलने का पता—

गुल्लू प्रसाद केदार नाथ बुकसेलर,

कचौड़ी गली बनारस सिटी।

मल्लिकार्जुन शंकरयास्वामी ब्राह्मण गांधकर

❋ इति ❋

कालभैरव स्तोत्र ।

❋ समाप्त ❋